पानीपत, हरियाणा में वेद विद्यालय के नए भवन एवं श्री ज्ञानेश्वर मंदिर के लोकार्पण के अवसर पर माननीय लोकसभा अध्यक्ष का सम्बोधन

———

- महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित आप सभी गुणीजनों को मेरा सादर प्रणाम तथा साधुवाद।

- आज बड़ा ही पावन अवसर है जब मुझे पानीपत की इस ऐतिहासिक नगरी में श्रीकृष्ण वेद विद्यालय के नए भवन एवं श्री ज्ञानेश्वर मंदिर के लोकार्पण का अवसर मिल रहा है।

- पानीपत नगर और हरियाणा की पवित्र भूमि का हमारे देश की प्राचीन सभ्यता संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। कुरुक्षेत्र की ऐतिहासिक धरा यहाँ से कुछ ही दूरी पर है, जहां महाभारत युद्ध की गाथा लिखी गयी थी। यहाँ स्थित सरस्वती नदी के किनारे मनीषियों द्वारा हमारे धर्मग्रंथ रचे गए थे। देखा जाए तो यह पूरा क्षेत्र हमारी प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति का जीवंत साक्षी रहा है।

- इस पुण्य स्थल पर वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा स्थापित वेद विद्यालय अपनी प्राचीन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक सराहनीय पहल है। गत सात वर्षों से वेद विद्यालय सुचारू रूप से कार्य कर रहा है और बहुत कम समय में ही यह यहाँ के जनमानस की श्रद्धा का केंद्र भी बन गया है। इसके नए भवन से आपके इस पहल को निश्चित ही और अधिक विस्तार मिलेगा, छात्र-छात्राओं को आवश्यक सुविधाएं मिलेंगी।

- आज ही ज्ञानेश्वर मंदिर का शुभारम्भ भी किया जा रहा है। निश्चय ही यह मंदिर भविष्य में आस्था, अध्यात्म और श्रद्धा के केंद्र के रूप में सर्वत्र प्रसिद्ध होगा।

- मुझे बताया गया है कि आगे आपकी योजना वेद विश्वविद्यालय की स्थापना की भी है। आज जब पूरे देश में हमारे वैदिक ज्ञान को संरक्षित और संवर्धित करने की सबसे अधिक आवश्यकता है, 30 वर्ष पुरानी यह संस्था वेद व्यास प्रतिष्ठान वेदों के शिक्षण के क्षेत्र में अद्भुत कार्य कर रही है। इसके लिए आप सबको साधुवाद।

- हमारे चारों वेद, ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद- इस पूरे ब्रह्मांड के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं। वेद मात्र धर्मग्रंथ नहीं हैं बल्कि हमारे प्राचीन ज्ञान, विज्ञान तथा जीवन शैली के जीवंत दस्तावेज हैं। वेद हमारी सभ्यता की आधारशिला हैं। ये हमारे भौतिक, आध्यात्मिक तथा धार्मिक जीवन को निर्धारित भी करते हैं।

- प्राचीन काल से आधुनिक काल तक ऐसे कितने ही मनीषी हुए हैं जिन्होंने वेदों के ज्ञान को समाज तक सरल भाषा में पहुँचाया है। स्वामी दयानंद सरस्वती से लेकर स्वामी विवेकानंद ने वेदों की शिक्षा को जन-जन पहुंचाने के लिए अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया।

- यह उनके ही अथक प्रयासों का फल है कि आज समस्त विश्व में इसके विषय में जानने की उत्सुकता है। लोग इस अमूल्य ज्ञान को आत्मसात करना चाहते हैं।

- हमारे वेद प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के अमूल्य भंडार हैं। इसीलिए हमारी इस अमूल्य निधि को बचाए रखना बहुत आवश्यक है। विशेष तौर पर हमारी युवा पीढ़ी को हमारे इस अनमोल ख़ज़ाने से परिचित कराना और भी

आवश्यक है। यह हमारा दायित्व है कि हम इस ज्ञान के ख़ज़ाने को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी उठाएं।

- इसलिए हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम इस ज्ञान को संरक्षित करें तथा आज की पीढ़ी को वेदों के प्रति जागरूक करें। मुझे बेहद प्रसन्नता है कि वेदव्यास प्रतिष्ठान इसी महत्वपूर्ण कार्य को प्रतिबद्धता से कर रहा है।

- वेदव्यास प्रतिष्ठान वेदों के अध्ययन करने वाले छात्रों को वित्तीय सहायता देता है तथा वेदों की शिक्षा देने वाले विद्यालयों को अनुदान देता है।

- साथ ही, यह प्रतिष्ठान वेदपाठी शिक्षकों को मानदेय तथा अन्य वित्तीय सहायता प्रदान करता है तथा कार्यशालाओं, सम्मेलनों एवं सिम्पोज़ियम के माध्यम से वेदों के पठन-पाठन को प्रोत्साहित करता है।

- महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के अतिरिक्त आप गीता परिवार, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल तथा श्रीकृष्ण सेवा निधि के माध्यम से भारत की सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार का पुण्य कार्य कर रहे हैं। ज्ञानेश्वर गुरुकुल में भारत की प्राचीन शिक्षा परम्परा के अनुसरण में छात्रों को गुरु के समीप रहकर वैदिक शिक्षा दी जाती है।

- आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है कि हम किस प्रकार आज की नौजवान पीढ़ी के अंदर अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर सकते हैं। निश्चित ही इसके लिए देश में देव वाणी संस्कृत के अध्ययन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

- केंद्र सरकार ने संस्कृत के प्राचीन गौरव को पुनः वापस लाने के लिए कार्ययोजना बनाई है। नई शिक्षा नीति में भी इसका उल्लेख किया गया है और कई नई योजनाएं भी बनाई गई हैं ताकि हमारे नौजवानों को व्यापक रूप से संस्कृत के ज्ञान से जुड़ने के लिए व्यापक कार्ययोजनाएं बनाई जाएं। इसके लिए महाविद्यालयों एवं शोध संस्थानों को आर्थिक सहायता दी जा रही है, संस्कृत के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जा रही है, प्राचीन पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय अनुदान दिया जा रहा है।

- इनमें से कुछ संस्थानों से कहा गया है कि वे कम से कम दो गाँवों को adopt करें और वहाँ संस्कृत की शिक्षा दें ताकि वहाँ के लोग इस भाषा में सहज हो पाएँ। मेरे विचार में यह एक अच्छी शुरुआत है।

- पर इस अभियान को जनता से जोड़ना अत्यन्त आवश्यक है। जब तक यह जन आंदोलन नहीं बनेगा, संस्कृत को उसके उचित स्थान पर वापस लाना कठिन होगा।

- साथियो, हाल के दिनों में जो प्रयास हुए हैं, उनसे संस्कृत को लेकर एक नई जागरूकता आई है। अब समय है कि इस दिशा में हम अपने प्रयास और बढाएं। हमारी विरासत को संजोना, उसको संभालना, नई पीढ़ी को देना ये हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है और भावी पीढ़ियों का उस पर अधिकार भी है। अब समय आ गया है कि इन कार्यों के लिए भी सबका प्रयास ज्यादा बढ़े।

- इस कार्य में सरकार के अतिरिक्त सामाजिक तथा आध्यात्मिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान जैसी संस्थाएँ प्रत्येक राज्य में बने जो संस्कृत एवं वैदिक ज्ञान का शिक्षण व्यापक रूप से करे और इसे एक जनांदोलन का रूप देने में अपना योगदान करे।

- जिस प्रकार से श्रीकृष्ण वेद विद्यालय और अन्य संस्थानों ने इस पावन कार्य को किया है कि उसी तरह अन्य संस्थानों को भी संस्कृत और वेद को समाज के नौजवानों तक पहुंचाने के लिए एक सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।
- मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्रीकृष्ण वेद विद्यालय के माध्यम से इस पावन कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलेगी। आप सबको मेरी तरफ़ से अनंत शुभकामनाएँ।